रविवार 30 अगस्त, 2020

विषय — ईसा मसीह

स्वर्ण पाठ: **1 यूहन्ना 4 : 14**

"और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 9 : 2-4, 6-8

2 जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए
मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।
3 तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसको बहुत आनन्द दिया; वे तेरे साम्हने कटनी के समय का सा आनन्द
करते हैं, और ऐसे मगन हैं जैसे लोग लूट बांटने के समय मगन रहते हैं।
4 क्योंकि तू ने उसकी गर्दन पर के भारी जूए और उसके बहंगे के बांस, उस पर अंधेर करने वाले की
लाठी, इन सभों को ऐसा तोड़ दिया है जेसे मिद्यानियों के दिन में किया था।
6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर
होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और
शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की
राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले
रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा॥
8 प्रभु ने याकूब के पास एक संदेश भेजा है, और वह इस्राएल पर प्रगट हुआ है;

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 42 : 1-4

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1 मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर अपना
आत्मा रखा है, वह अन्यजातियों के लिये न्याय प्रगट करेगा।
2 न वह चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा, न सड़क में अपनी वाणी सुनायेगा।
3 कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा; वह सच्चाई से न्याय
चुकाएगा।
4 वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे; और द्वीपों के लोग
उसकी व्यवस्था की बाट जाहेंगे॥

2. यशायाह 61 : 1-3

1 प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और
मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों
के लिये छुटकारे का प्रचार करूं;
2 कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब
विलाप करने वालों को शान्ति दूं
3 और सिय्योन के विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर कर के सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका
विलाप दूर कर के हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं; जिस से वे
धर्म के बांजवृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और जिस से उसकी महिमा प्रगट हो।

3. मरकुस 1 : 1

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।

4. मरकुस 3 : 1-5, 13-15, 22-27

1 और वह आराधनालय में फिर गया; और वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूख गया था।
2 और वे उस पर दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे हुए थे, कि देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा
करता है कि नहीं।
3 उस ने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा; बीच में खड़ा हो।
4 और उन से कहा; क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?
पर वे चुप रहे।

5 और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास होकर, उन को क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा उस ने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया।
13 फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुलाया; और वे उसके पास चले आए।
14 तब उस ने बारह पुरूषों को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें।
15 और दुष्टात्माओं के निकालने का अधिकार रखें।
22 और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, कि उस में शैतान है, और यह भी, कि वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।
23 और वह उन्हें पास बुलाकर, उन से दृष्टान्तों में कहने लगा; शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है?
24 और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य क्योंकर स्थिर रह सकता है?
25 और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्योंकर स्थिर रह सकेगा?
26 और यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो वह क्योंकर बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही हो जाता है।
27 किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले; और तब उसके घर को लूट लेगा।

5. यूहन्ना 8 : 31-36

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
33 उन्होंने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?
34 यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।
35 और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।
36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

6. यूहन्ना 14 : 5, 6, 10, 12, 15

5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?
6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

7. यूहन्ना 15 : 1-12

1 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है।
2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।
3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।
4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।
8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।
11 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
12 मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **433 : 31-1**

आह! लेकिन मसीह, सत्य, जीवन की भावना और नश्वर मनुष्य के दोस्त, उन जेल के दरवाजों को चौड़ा कर सकते हैं और बंदी मुक्त स्थापित कर सकते हैं।

2. **583 : 10-11**

मसीह। भगवान की दिव्य अभिव्यक्ति, जो अवतार त्रुटि को नष्ट करने के लिए मांस के लिए आती है।

3. **288 : 29-1**

मसीहा में मसीह-तत्व ने उन्हें मार्ग-दर्शन, सत्य और जीवन का मार्ग दिखाया।

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है।

4. **136 : 1-5, 32-1**

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है।

यीशु ने धीरज धरने की सच्चाई सिखाने और उसका प्रदर्शन करने में धीरज से काम लिया।

5. **315 : 29-7**

एक मानव रूप में पहने हुए (अर्थात्, जैसा कि यह नश्वर दृश्य लगता था), एक मानव मां द्वारा कल्पना की जा रही थी, यीशु सत्य और त्रुटि के बीच आत्मा और मांस के बीच मध्यस्थ थे। ईश्वरीय विज्ञान के तरीके को समझाते और प्रदर्शित करते हुए, वह उन सभी के लिए मुक्ति का मार्ग बन गया, जिन्होंने उनके वचन को स्वीकार किया। उससे नश्वर जान सकते हैं कि बुराई से कैसे बचा जाए। विज्ञान को उसके निर्माता से जोड़ा जा रहा असली आदमी, नश्वर को केवल पाप से मोड़ने की जरूरत है और मसीह, वास्तविक व्यक्ति और भगवान के साथ उसके संबंध को खोजने के लिए और दिव्य पुत्रत्व को पहचानने के लिए नश्वर स्वार्थ की दृष्टि खोना चाहिए।

6. **399 : 29-19**

हमारे मास्टर ने पूछा: "कोई मजबूत आदमी के घर में कैसे घुस सकता है और अपना माल खराब कर सकता है, सिवाय इसके कि वह पहले मजबूत आदमी को बांध दे?" दूसरे शब्दों में: तथाकथित नश्वर दिमाग से शुरुआत किए बिना, मैं शरीर

को कैसे ठीक कर सकता हूं, जो सीधे शरीर को नियंत्रित करता है? जब इस तथाकथित मन में बीमारी एक बार नष्ट हो जाती है, तो बीमारी का डर दूर हो जाता है, और इसलिए रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है। नश्वर मन "मजबूत आदमी" है, जिसे स्वास्थ्य और नैतिकता पर इसके प्रभाव से पहले अधीनता में आयोजित किया जाना चाहिए। इस त्रुटि पर विजय प्राप्त की, हम उसके माल के "मजबूत आदमी" को समाप्त कर सकते हैं, - अर्थात् पाप और बीमारी।

नश्वर स्वास्थ्य की सद्भाव प्राप्त करते हैं, केवल इसलिए कि वे कलह का त्याग करते हैं, दिव्य मन की सर्वोच्चता को स्वीकार करते हैं, और अपनी भौतिक मान्यताओं को छोड़ देते हैं। सचेत विचार में मूर्त आकार लेने से पहले, विचारशील शरीर से रोग की छवि को हटा दें, शरीर को उर्फ, और आप रोग के विकास को रोकते हैं। यह कार्य आसान हो जाता है, यदि आप समझते हैं कि हर बीमारी एक त्रुटि है, और कोई चरित्र नहीं है और न ही टाइप है, सिवाय इसके कि नश्वर मन इसे क्या प्रदान करता है। त्रुटि या बीमारी से ऊपर उठकर, और सच्चाई के लिए लगातार संघर्ष करके, आप त्रुटि को नष्ट करते हैं।

7. 25 : 13-21

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यीशु ने ईश्वर के आदर्श को किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में बेहतर प्रस्तुत किया जिसकी उत्पत्ति कम आध्यात्मिक थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया। अत: उसके पालन की शक्ति, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

8. 54 : 1-17

अपने मानव जीवन की परिमाण के माध्यम से, उन्होंने दिव्य जीवन का प्रदर्शन किया। अपने शुद्ध स्नेह के आयाम से, उन्होंने प्यार को परिभाषित किया। सत्य के मिलन के साथ, उन्होंने त्रुटि को समाप्त कर दिया। इसे देखकर नहीं; दुनिया ने उसकी धार्मिकता को स्वीकार नहीं किया, लेकिन पृथ्वी को सद्भाव प्राप्त हुआ जिसे उसके गौरवशाली उदाहरण ने पेश किया।

उनके शिक्षण और उदाहरण का अनुसरण करने के लिए कौन तैयार है? सभी को जल्द से जल्द या बाद में खुद को मसीह में रखना चाहिए, भगवान का सही विचार। वह उदारतापूर्वक अपने प्रिय-खरीदे हुए खजाने को खाली या पाप से भरे मानव भंडारों में डाल सकता है, जो यीशु के गहन मानव बलिदान की प्रेरणा थी। अपने दिव्य आयोग के साक्षी में, उन्होंने यह प्रमाण प्रस्तुत किया कि जीवन, सत्य और प्रेम बीमारों और पापों को चंगा करते हैं, और मन के माध्यम से मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं, भौतिक नहीं। यह सबसे बड़ा सबूत था जो वह दिव्य प्रेम की पेशकश कर सकता था।

9. 18 : 3-9

नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया।

10. 227 : 14-26

मनुष्य के अधिकारों को त्यागकर, हम सभी उत्पीड़न के विनाश को दूर करने में विफल नहीं हो सकते। गुलामी मनुष्य की वैध स्थिति नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र किया। पाल ने कहा, "मैं आज़ाद पैदा हुआ था।" सभी पुरुषों को स्वतंत्र होना चाहिए। "जहां कहीं प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतंत्रता है।" प्रेम और सत्य मुक्त करते हैं, लेकिन बुराई और त्रुटि पुरुषों को कैद में ले जाती है।

क्रिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोने के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो! ” यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है।

11. 37 : 22-27

यह संभव है, - हाँ, यह प्रत्येक बच्चे, पुरुष और महिला का कर्तव्य और विशेषाधिकार है, - कि उन्हें कुछ हद तक स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य और जीवन के प्रदर्शन द्वारा मास्टर के उदाहरण का पालन करना चाहिए। ईसाई उसके अनुयायी होने का दावा करते हैं, लेकिन क्या वे उस तरीके से उसका अनुसरण करते हैं जो उसने आज्ञा दी थी?

12. 572 : 6-8

"आपस में प्रेम रखें" (I यूहन्ना, 3:23), प्रेरित लेखक की सबसे सरल और गहन सलाह है।

13. 45 : 16-21

भगवान की जय हो, और संघर्षशील दिलों को शांति मिले! मसीह ने मानव आशा और विश्वास के द्वार से पत्थर को लुढ़का दिया, और ईश्वर में जीवन के रहस्योद्घाटन और प्रदर्शन के माध्यम से, उन्हें मनुष्य के आध्यात्मिक विचार और उनके दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ संभवतया एक-मानसिक रूप से उन्नत किया।

14. 434 : 6-7

"मसीह का कानून हमारे कानूनों को ध्वस्त करता है, आइए हम मसीह का अनुसरण करें।"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के

लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6